| Nr. | | Seite |
|---|---|---|
| 143. | Ich wags, Gott vermags | 83 |
| 144. | So der Herr will | 84 |
| 145. | Der König aller Könige | 85 |
| 146. | Der Reichthum | 85 |
| 147. | Der Schatz | 86 |
| 148. | Gott und genug | 86 |
| 149. | Was Gott thut, das ist wohlgethan | 88 |
| 150. | Den Demüthigen gibt Gott Gnade | 88 |
| 151. | Seid Thäter des Wortes | 89 |
| 152. | Der Pilger | 89 |
| 153. | Komm, Herr Jesu, sei unser Gast | 90 |
| 154. | Dr. Luthers Wohlthätigkeit | 93 |
| 155. | Das Vogelgeschrei | 93 |
| 156. | Einen fröhlichen Geber hat Gott lieb | 95 |
| 157. | Der kleine Samariter | 96 |
| 158. | Wie man dem Nächsten sein Gut und Nahrung behüten helfen soll | 97 |
| 159. | Die ehrliche Näherin | 97 |
| 160. | Das böse Gewissen | 98 |
| 161. | Du sollst nicht stehlen | 98 |
| 162. | Vom Rathgeben | 99 |
| 163. | Der Fischer | 100 |
| 164. | Du sollst deinen Vater und deine Mutter ehren | 101 |
| 165. | Kindesdank | 102 |
| 166. | Für Vater und Mutter barfuß gehen | 102 |
| 167. | Geschwisterliebe | 104 |
| *168. | Der Sonnenaufgang | 104 |
| *169. | Die Sterne | 105 |
| *170. | Bei Nacht | 106 |
| 171. | Die Sonne | 106 |
| 172. | Tag, Monat und Jahr | 107 |
| 173. | Die Erde | 112 |
| *174. | Die Kirche | 113 |
| *175. | Die Dorfkirchglocke | 113 |
| *176. | Abendgeläut | 113 |
| 177. | Unerwartet und dennoch erwartet | 114 |
| *178. | Laß Jesum zu dir eingehen | 114 |
| 179. | Luther beim Tode seines Töchterleins | 115 |
| 180. | Sprichwörter | 115 |